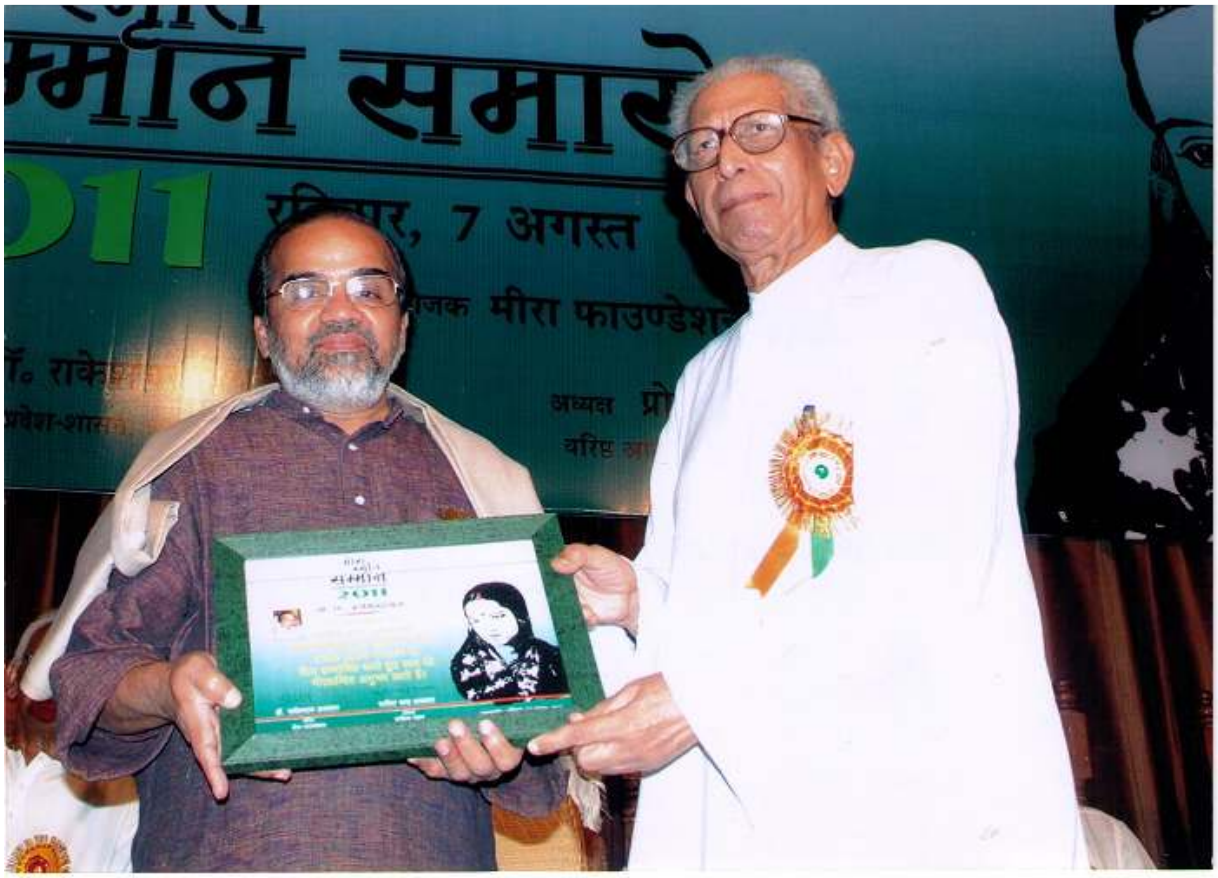
मीरा फाउण्डेश

# मीरा स्मृति सम्मान

**मीरा फाउण्डेशन एवं साहित्य भंडार, इलाहाबाद का संयुक्त आयोजन**

प्रेस विज्ञप्ति

## मीरा–स्मृति सम्मान समारोह 2011 सम्पन्न

इलाहाबाद : मीरा फाउण्डेशन द्वारा आयोजित मीरा स्मृति सम्मान समारोह में अध्यक्ष पद से बोलते हुए वरिष्ठ आलोचक प्रो. नामवर सिंह ने कहा कि इलाहाबाद में इतनी अधिक हिन्दी प्रेमी श्रोता समूह को देखकर मेरी आयु कई वर्ष बढ़ गयी है। इस फाउण्डेशन ने जिन रचनाकारों का सम्मान किया है वे अपने क्षेत्र के ऐसे विद्वान हैं जिन पर हमें गर्व है। प्रो. नामवर सिंह ने कहा कि प्रो. जगन्नाथ पाठक, श्री अमरकांत एवं प्रो. अरविन्दाक्षन के साथ श्री गिरीश पाण्डे एवं प्रो. उषा यादव का सम्मान कर यह समारोह महत्वपूर्ण बन गया है। उन्होंने प्रो. जगन्नाथ पाठक से जुड़ी अपनी पुरानी स्मृतियों का भी उल्लेख किया तथा कहा कि इलाहाबाद की ज़मीन ने उन्हें ज्यादा उर्वर बनाया है।

इसके पूर्व वरिष्ठ कथाकार अमरकान्त को उनकी अनुपस्थिति में तथा केरल के प्रो. ए. अरविन्दाक्षन, डॉ. जगन्नाथ पाठक, श्री गिरीश पाण्डे तथा आगरा की प्रो. (श्रीमती) उषा यादव को उनकी उपलब्धियों के लिये मीरा–स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के कुल सचिव डॉ. चन्द्रकांत त्रिपाठी विशिष्ठ अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

इस सत्र में पाँच पुस्तकों का विमोचन किया गया–'तू फूं'–श्री दूधनाथ सिंह, 'हिन्दी कथा साहित्य : विचार और विमर्श'–श्री चंचल चौहान, 'आपातकाल : हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता'–श्री अमरेन्द्र कुमार शर्मा, 'कस् में हीरालाल'–श्री हीरालाल, 'सौ ग़ज़लें'–श्री ज़मीर अहसन।

स्व. उपेन्द्र नाथ अश्क पर केन्द्रित प्रथम सत्र में बोलते हुए श्री दूधनाथ सिंह ने कहा कि अश्क जी के चरित्र में तरह–तरह की सम्भावनाएँ एवं असम्भावनाएँ थी। 'गर्म राख' तथा 'बड़ी–बड़ी आँखें' उनके ऐसे उपन्यास है जो महत्त्वपूर्ण हैं। अश्क जी कभी पराजित नहीं हुए उनमें अपने समय से संघर्ष करने का माद्दा था। वह एक महत्वाकांक्षी लेखक थे। श्री दूधनाथ सिंह ने कहा कि अश्क एक ऐसे मानवीय गुणों से भरपूर इंसान थे जो विपरीत परिस्थितियों में सच्चे मित्र थे लेकिन उनसे जरा भी छेड़छाड़ भयंकर साहित्यिक दुराव का परिणाम बन जाती थी। वे किसी लेखन की भरपूर प्रशंसा के बावजूद उसे वाहियात सिद्ध करने में भी नहीं चूकते थे। अंतिम दिनों तक वे लेखन से विरत नहीं हुए। उन्होंने विपुल तथा साहित्य की हर विधा पर साधिकार लेखन किया।

श्री प्रेमशंकर गुप्त ने कहा कि अश्क की रचनाओं में जीवन का एक ऐसा यथार्थ मिलता है जो उन्हें एक बेहतर इंसान सिद्ध करता है। उन्होंने अश्क जी की 'पीली चोंच वाली चिड़िया' से कुछ महत्त्वपूर्ण अंश पढ़े। उन्होंने कहा कि अश्क के पूरे चरित्र में उनका अपना अनुभव दृष्टिगोचर होता है। इसीलिए वे इतने विवादित भी रहे। उन्होंने कहा कि अश्क जी ने अपनी एक पुस्तक नवोदित युवा रचनाकारों के नाम समर्पित की है, जो इस बात का संकेत है कि उन्हें युवा पीढ़ी पर ज्यादा भरोसा था।

.....2

अध्यक्ष
सतीश चन्द्र अग्रवाल
9335155792

उपाध्यक्ष
डॉ० एस० के० पाण्डेय
9415237271
डॉ० राघवेंयु
9956806411

सचिव
डॉ० राधेश्याम अग्रवाल
9839419792

संयोजक
डॉ० अशोक त्रिपाठी
011-22237495

सदस्य
डॉ० आनन्द कुमार श्रीवास्तवै
9415235638
डॉ० विजय अग्रवाल
9425194556
डॉ० पृथ्वीनाथ पाण्डेय
9919023870

प्रबंध संचालक
विभोर अग्रवाल
9415214878

मीरा फाउण्डेशन, 49बी/37, न्याय मार्ग, इलाहाबाद - 211 001 दूरभाष 0532 - 2422840, मोबाइल : 9335155792
साहित्य भंडार, 50, चाहचन्द (जीरो रोड), इलाहाबाद 211 003 दूरभाष 0532 - 2400787, 2402072

# मीरा स्मृति सम्मान

**मीरा फाउण्डेशन एवं साहित्य भंडार, इलाहाबाद का संयुक्त आयोजन**

( 2 )

श्रीमती ममता कालिया ने कहा कि अश्क जी की रचनाओं में उनकी ज़िन्दादिली भरपूर मिलती है। वह खुद अपनी बोली में लतीफे डालने का अदम्य साहस रखते थे। उनके पास उर्दू की खान थी और उन्होंने हिन्दी/उर्दू में समान रूप से लेखन किया।

अश्क जी के पुत्र एवं कवि श्री नीलाभ ने कहा कि लेखक का मूल्यांकन उसका समाज करता है भले ही समकालीन उनसे सीधे संवाद में न रहें, आने वाला समय ही उसका सही मूल्यांकन कर सकता है। उन्होंने वरिष्ठ कवि श्री अशोक वाजपेयी पर कटाक्ष करते हुए कहा कि श्री वाजपेयी ने पाँच वरिष्ठ रचनाकारों में से जिनकी शताब्दी वर्ष है मात्र दो को चुना तथा विशेष रूप से "अज्ञेय" के लिए आयोजन को प्राथमिकता दी। उन्होंने प्रश्न उठाया कि क्या किसी रचनाकार या आलोचक को किसी रचनाकार को महान बनाने का अधिकार प्रदत्त है? शायद यह संकुचित है तथा इसकी अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। इस सत्र का संचालन राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल के निदेशक प्रो. विजय अग्रवाल ने किया। उन्होंने कहा कि अश्क जी जीवन भर विवादों में रहे। बहुत सारे विवादों की पृष्ठभूमि वे स्वयं निर्मित करते थे। इसीलिए उनकी रचनाओं एवं उनके साहित्यिक अवदान का सही मूल्यांकन नहीं हो सका।

प्रारम्भ में डॉ० एस० के० पाण्डेय ने स्वागत और डॉ० आनन्द श्रीवास्तव ने संचालन किया।

द्वितीय सत्र में भी पाँच पुस्तकों का लोकार्पण हुआ, 'नेह के नाते'–डॉ० कमला प्रसाद, 'जस्ट फ़िट'–श्रीराम वर्मा, 'मनवा बेपरवाह'–श्री लीलाधर मंडलोई, 'नील नदी की सावित्री'–श्री ललित सुरजन, 'मुक्तिबोध का रचना–संसार'–वर्षा अग्रवाल।

इस अवसर पर श्री लीलाधर मंडलोई (दिल्ली), ललित सुरजन (रायपुर), मत्स्येन्द्र शुक्ल, श्याम विद्यार्थी, विनय तिवारी, डी० एन० मोघे, राजेन्द्र शर्मा, डॉ० शान्ति चौधरी, सतीश चन्द्र अग्रवाल, डॉ० अशोक त्रिपाठी, श्री राधेश्याम अग्रवाल एवं श्री विभोर अग्रवाल उपस्थित रहें।

समारोह के दूसरे दिन 85 वर्षीय श्री अमरकांत को उनके आवास पर जाकर मीरा–स्मृति सम्मान से विभूषित किया गया। अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के प्रो० ए० अरविन्दाक्षन, प्रो० विजय अग्रवाल एवं मीरा फाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री सतीश चन्द्र अग्रवाल ने उनका सम्मान किया।

इस अवसर पर श्री अमरकांत ने कहा कि अपने लेखन के लिए अपने ही शहर में पुरस्कृत होना एक सुखद अनुभव है। अपनी अस्वस्थता के कारण मैं कार्यक्रमों में भाग नहीं ले पाता लेकिन मुझे अपने पाठकों एवं साहित्य प्रेमियों से अटूट लगाव है। मेरी रचना के केन्द्र बिन्दु में जो समाज है उसे कैसे भूला जा सकता है। प्रो० अरविन्दाक्षन ने कहा कि एक कथाकार के रूप में अमरकांत की रचनाएँ दक्षिण भारत में सुलभ हो इसके प्रयास जारी हैं।

(सतीश चन्द्र अग्रवाल)
अध्यक्ष

संलग्न : फोटो


अध्यक्ष
सतीश चन्द्र अग्रवाल
9335155792

उपाध्यक्ष
डॉ० एस० के० पाण्डेय
9415237271
डॉ० राजबंधु
9956806411

सचिव
डॉ० राधेश्याम अग्रवाल
9839419792

संयोजक
डॉ० अशोक त्रिपाठी
011-22237495

सदस्य
डॉ० आनन्द कुमार श्रीवास्तव
9415235638
डॉ० विजय अग्रवाल
9425194556
डॉ० पृथ्वीनाथ पाण्डेय
9919023870

प्रबंध संचालक
विभोर अग्रवाल
9415214878